प्यारे रसूल (सल्ल०)

अफ़ज़ल हुसैन
(एम.ए., एल.टी)

क्या	कहां

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह रहमान-रहीम के नाम से

नबी

अल्लाह ने सब को पैदा किया। धरती बनाई, आकाश सजाये। चांद सूरज के दिये जलाये। नन्हे-मुन्ने तारे जगमगाये! वही हवा चलाता है, बादल उठाता है, पानी बरसाता है, खेती उगाता है, अनाज पैदा करता है, सब को खिलाता है, पिलाता है, हमारी सारी ज़रूरतें पूरी करता है। वही सब का पैदा करने वाला है। वही सब को रोज़ी देता है। वही हमारा मालिक है। वही हमारा हाकिम है। हम सब उसके बन्दे हैं। हम सब उसके ग़ुलाम हैं। हमें उसी का कहा मानना चाहिये। हमें उसी की बन्दगी करनी चाहिये। वही अकेला हमारा माबूद है।

अल्लाह सब का बादशाह है। उसका राज्य बहुत बड़ा है। यह ज़मीन उसके राज्य का एक छोटा सा हिस्सा है। ज़मीन पर अल्लाह ने इनसान को बसाया। उसने हमको अपना ख़लीफ़ा (नुमाइन्दा) बनाया। ज़रूरत का सारा सामान दिया। रहने-सहने का ढंग सिखाया। हमको अपनी मर्ज़ी बताई। अपनी मर्ज़ी बताने के लिये नबी भेजे। नबी सब इनसान थे। अल्लाह के प्यारे बन्दे और उसके ग़ुलाम थे।

नबी सदा सच बोलते। कभी कोई बुरा काम न करते। सबको अल्लाह का हुक्म सुनाते। अल्लाह की बातें पूरी की पूरी बताते। अल्लाह की मर्ज़ी पर चल कर दिखाते। लोगों को अल्लाह की मर्ज़ी पर चलाते।

नबी अल्लाह का पैग़ाम लाते, इसलिये उनको अल्लाह का पैग़म्बर कहते हैं। नबी अल्लाह के भेजे हुए होते हैं, इसलिये वे अल्लाह के रसूल कहलाते हैं।

हज़रत आदम अल्लाह के रसूल थे। हज़रत नूह अल्लाह के रसूल थे। हज़रत इब्राहीम अल्लाह के रसूल थे। हज़रत मूसा, हज़रत दाऊद, हज़रत ईसा (अलै०) सब अल्लाह के रसूल थे। रसूल सब अच्छे थे। अल्लाह का पैग़ाम लाये। सब ने अल्लाह की मर्ज़ी बतलाई। आख़िर में अल्लाह के प्यारे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्ल०) तशरीफ़ लाये। आप पर अल्लाह ने क़ुरआन उतारा। क़ुरआन अल्लाह की किताब है। आप के बाद अब कोई नबी न आयेगा।

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मद, व अला आलि मुहम्मद, व बारिक व सल्लिम

"ऐ अल्लाह हज़रत मुहम्मद और उन की आल पर रहमत भेज और बरकत दे और सलामती बख़्श।"

आप से पहले

प्यारे नबी जब पैदा हुए तो दुनिया का बहुत बुरा हाल था। अल्लाह की मर्ज़ी बताने के लिये कोई नबी न था। नबी सब जा चुके थे। दुनिया वाले भटक गये थे। अल्लाह के बाग़ी बन गये थे। नबियों की तालीम भुला बैठे थे। अल्लाह का रास्ता छोड़ चुके थे। अपनी मन-मानी करते या अपने जैसे आदमियों की पैरवी करते। बिरादरी और जाति के चलन और रिवाज पर चलते। अल्लाह की किताबें बिगाड़ दी थीं, उनमें अपनी बातें मिला रखी थीं। लोग पत्थर की मूर्तियां बना कर पूजते। देवी-देवताओं की पूजा करते। उनके नाम पर जानवर ज़िबह करते। मन्नत मानते, चढ़ावे चढ़ाते। पेड़, पहाड़, नदी-नाले, जानदार, बेजान सब उनके माबूद थे। एक ख़ुदा को छोड़कर उन्होंने हज़ारों ख़ुदा बना लिये थे।

बुराइयां बहुत बढ़ गईं थीं। लोग बुरे-बुरे काम करते। शराब पीते, जुआ खेलते। आपस में लड़ते। चोरी करते, डाके डालते, झूट बोलते, वादा-ख़िलाफ़ी करते, बात कहकर मुकर जाते, धोखा देते, दूसरों का माल मार लेते, यतीमों और बेवाओं को सताते। मुसाफ़िरों को दुख देते। औरतों को ज़िन्दा आग में जला देते। झूटी इज़्ज़त के लिये नन्हीं बच्चियों

को ज़िन्दा गाड़ देते। नाच रंग में मस्त रहते। जानवरों को सताते, कोई बुरा काम ऐसा न था जो ये लोग न करते हों। सच है अल्लाह का दीन छोड़ने का यही फल होता है।

जब दुनिया वाले बिल्कुल भटक गये तो अल्लाह को उन पर रहम आया और उनको सीधा रास्ता दिखाने के लिये प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को भेजा।

आप का ख़ानदान

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) प्यारे रसूल का प्यारा नाम था। आप मक्का नगर में पैदा हुए। मक्का अरब देश का एक मशहूर नगर है। अल्लाह का पाक घर 'काबा' इसी मक्का नगर में है। अरब देश यहां से दूर, बहुत दूर समुन्दर पार एक देश है। यह देश हमारे देश से पश्चिम की ओर है। इस देश में बहुत से ख़ानदान थे। क़ुरैश का ख़ानदान इनमें सब से ज़्यादा इज़्ज़त वाला था। इसी ख़ानदान के लोग काबे की देख-भाल करते थे। सारे अरब वाले क़ुरैश की इज़्ज़त करते थे। प्यारे नबी इसी ख़ानदान के थे।

आप के ख़ानदान में बहुत से मशहूर लोग हुए हैं। इनमें से एक क़ुसई थे। क़ुसई अपने ख़ानदान के सरदार थे। हज के दिनों में सारे हाजियों को अपना मेहमान समझते। तीन दिन तक उन्हें मुफ़त खाना खिलाते। क़ुसई की औलाद में एक हाशिम गुज़रे हैं। हाशिम बहुत बलवान और दानी थे। एक बार सूखा पड़ा। हाशिम ने अपने पास से बहुत सा अनाज मोल लिया और लोगों में मुफ़्त बांट दिया।

हाशिम के कई बेटे थे। इनमें सब से मशहूर अब्दुल मुत्तलिब थे। यह भी अपने ख़ानदान के सरदार थे।

अरब में पानी की बहुत कमी है। मक्के वालों के लिये ज़मज़म

का कुंआ अल्लाह की बहुत बड़ी नेमत है। बहुत दिनों से वह अट गया था। किसी को यह भी पता न था कि वह कहां था। अब्दुल मुत्तलिब ने बड़ी कोशिश करके इसका पता लगाया। बड़ी मेहनत से उसे साफ़ कराया। मक्के वालों को पानी की आसानी हो गई। इस बड़े काम की वज़ह से मक्के के लोग उनकी बड़ी इज़्ज़त करते थे।

अब्दुल मुत्तलिब के कई बेटे थे। उनमें सब से छोटे और लाडले अब्दुल्लाह थे। यही अब्दुल्लाह प्यारे रसूल के अब्बू जान थे। अब्दुल्लाह की शादी बीबी आमना से हुई। बीबी आमना प्यारे नबी की अम्मी थीं।

बचपन

प्यारे नबी पीर (सोमवार) के दिन पैदा हुए। आप के अब्बूजान कुछ दिन पहले ही मर चुके थे। दादा मियां ज़िंदा थे। सुना तो बहुत ख़ुश हुए। घर आये, पोते को गोद में लिया, प्यार किया, काबे में ले गये, दुआ मांग कर वापिस लाये। मुहम्मद नाम रखा। अक़ीक़ा किया। सब की दावत की। लोगों ने पूछा "यह नाम क्यों रखा ?" बोले मैं चाहता हूं मेरे बेटे की सारी दुनिया तारीफ़ करे।

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मद व अला
आलि मुहम्मद व बारिक व सल्लिम

मक्के का रिवाज था, लोग बच्चों को गांव भेज देते, वहीं उनकी परवरिश होती। आप भी गांव भेज दिये गये। दाई हलीमा ने आप को पाला। वह बहुत नेक औरत थीं। आप ने उनका दूध पिया। खुली हवा में पले, बढ़े, ख़ूब मोटे-ताज़े हुए, साफ़-सुथरी बोली सीखी। दो साल बाद मक्के आये। अम्मीजान ने देखा, बहुत ख़ुश हुईं। मक्के में बीमारी फैली थी। आप फिर दाई हलीमा के साथ भेज दिये गये।

आप की भोली सूरत देखते, सब आप से प्यार करते। आप की मीठी बातें सुनते, सब आप से ख़ुश होते। आप दाई हलीमा के बच्चों से बहुत प्यार करते। वे भी आप से बहुत प्यार करते। साथ-साथ खेलते,

बकरियां चराने जाते तो आपको अपने साथ ले जाते। चार साल के हुए तो अम्मीजान के पास वापिस आये। अम्मीजान आप को देखकर बहुत ख़ुश हुईं। मुहब्बत से पालने लगीं। छः साल के हुए तो आप को लेकर मैके गईं। रास्ते में बीमार होकर चल बसीं। अब मां-बाप दोनों का साया सर से उठ गया।

दादा मियां ने आप की देखरेख की। बहुत मुहब्बत से पाला। आठ साल के हुए तो दादा मियां भी चल बसे। मरते वक़्त दादा ने आप को अबू तालिब के हवाले कर दिया। अबू तालिब आप के चचा थे। आप के कई चचा थे। अबू तालिब उन सब में अच्छे थे। आपसे मुहब्बत करते थे, हमेशा साथ-साथ लिये फिरते, प्यार करते, किसी तरह का दुख न होने देते, जहां जाते अपने साथ रखते।

एक बार ऐसा हुआ, आप अभी छोटे थे। काबे की एक दीवार टूट गयी थी। लोग मरम्मत कर रहे थे। बच्चे भी दौड़-दौड़ कर काम करते। कंधों पर पत्थर लाद कर लाते और दीवार में लगाते; पत्थर लाने वालों में आप भी थे। कुछ देर में जब कंधे दुखने लगे तो बच्चों ने अपने-अपने तहबन्द खोल कर कंधों पर रख लिये। आपने नंगा होना नापसन्द किया, आप के चचा भी मौजूद थे। बोले "बेटा तुम भी तहबन्द उतार

कर कंधे पर रख लो।" आपने चचा के कहने पर तहबन्द खोलना चाहा, परन्तु नंगा होने की हिम्मत न पड़ी, लाज के मारे बेहोश होकर गिर पड़े। चचा ने जब यह हाल देखा तो नंगा होने से रोक दिया।

जवानी

चचा की देख-रेख में हज़रत पले, बढ़े। जवान हुए। जवानी में आप सबसे अच्छे थे। अरब के जवान आपस में लड़ते-भिड़ते। हज़रत लड़ाई से सदा दूर रहते। सब शराब पीते, जुआ खेलते, बुरे-बुरे काम करते। आप इन बातों से नफ़रत करते, लोग मूर्तियाँ पूजते, झूठ बोलते, बेशर्मी के काम करते। आप इन चीज़ों को बुरा समझते। ग़रीबों को खाना खिलाते, कमज़ोरों की मदद करते।

हज़रत के चचा कारोबार करते थे। आप भी यही काम करने लगे। कारोबार को आप बहुत अच्छा समझते थे। आप बहुत अच्छे व्यापारी थे। सदा सच बोलते, झूठ के पास न जाते। सब आप को 'सादिक़' कहते। आप मामला अच्छा रखते। किसी को धोखा न देते। लोग आप को 'अमीन' कहते। सब आप की इज़्ज़त करते।

मक्के में एक मालदार औरत थीं, उनका नाम ख़दीजा

था। बीबी ख़दीजा बेवा थीं। उनके शौहर मर गये थे। उनके पास माल था लेकिन कारोबार करने वाला कोई न था। उन्होंने आपको कारोबार के लिये रुपया दिया। आप माल लेकर शाम के देश गये। वहां से बहुत माल कमा कर लाये। पाई-पाई का हिसाब दे दिया। बीबी ख़दीजा नेक थीं। आपकी नेकी देख कर ख़ुश हो गयीं। ख़ुद शादी का पैग़ाम दिया। आप तैयार हो गये। बीबी ख़दीजा से शादी हो गयी। उस समय आपकी उम्र पच्चीस साल थी और बीबी ख़दीजा चालीस वर्ष की थीं।

आप मक्के वालों का ज़ुल्म देख कर कुढ़ते, बुराइयां दूर करने के उपाय सोचा करते। आप ने नवजवानों को समझाया। सब ने मिलकर एक कमेटी बनाई। कमेटी का हर मेम्बर वादा करता कि "हम देश से बद-अम्नी दूर करेंगे। मुसाफ़िरों की हिफ़ाज़त करेंगे। किसी पर ज़ुल्म न होने देंगे।"

कमेटी वालों ने कोशिश की, ज़ुल्म घटने लगा। बद-अम्नी दूर होने लगी। लोगों में आपकी चर्चा हुई, सब आपको सराहने लगे, आप पर भरोसा करने लगे।

एक बार ऐसा हुआ, काबे की मरम्मत हो रही थी। पुरानी दीवारें तोड़कर बनाई जा रही थीं। एक दीवार में 'हजरे असवद' लगा था। यह एक काला पत्थर

था। यह पत्थर हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की यादगार था। सब इस को बा-बरकत समझते। जब दीवार में इस पत्थर को चुनने का वक़्त आया तो आपस में झगड़ा होने लगा। हर एक चाहता था कि यह बरकत वाला पत्थर मैं लगाऊं। इस बात पर लड़ाई ठन गई। डर था कि कहीं कोई बड़ा दंगा न हो जाये। पर किसी न किसी तरह यह तै हुआ कि कल जो आदमी सबसे पहले काबे में आये, उसी का कहा मान लिया जाये। ख़ुदा का करना दूसरे दिन सब से पहले हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) काबे में आये। सबको आप पर भरोसा था। सब ने आपको पंच मान लिया। आप ने झगड़ा बड़ी अच्छी तरह निपटा दिया। आप ने एक चादर ली, उसमें हजरे असवद को रखा। हर क़बीले के सरदार को एक-एक किनारा पकड़ने के लिये कहा। सब ने मिल-जुल कर ऊपर उठाया। जब पत्थर वहां तक ले आये जहां उसे रखना था, तो आपने उसे उठाकर दीवार में चुन दिया। इस तरह हर क़बीले को इस काम में हाथ बटाने का मौक़ा मिल गया और एक बहुत बड़ा दंगा होते-होते बच गया।

अब नबी हुऐ

मक्के के पास एक पहाड़ी थी। पहाड़ी में एक गुफा थी। गुफा का नाम हिरा था। आप हिरा की गुफा में जाते। सत्तू पानी साथ ले जाते। कई-कई दिन वहां अकेले रहते। अल्लाह की इबादत करते। लोगों की भलाई के उपाय सोचते। बुराइयों को मिटाने और नेकियों को फैलाने के रास्ते ढूंढते। फिर अल्लाह ने आप को रसूल बनाया। अपने फ़रिश्ते हज़रत जिबरईल को आप के पास भेजा। हज़रत जिबरईल अल्लाह का पैग़ाम लाये जो आप-को सुनाया। आप घर लौटे, बीबी ख़दीजा से सब कुछ कह सुनाया, आप कुछ परेशान थे। बीबी ख़दीजा ने ढारस बंधाई। "घबराते क्यों हैं, अल्लाह आप को बरबाद न होने देगा। वह आपकी हिफ़ाज़त करेगा। आप नेकी करते हैं, दान देते हैं, ग़रीबों की मदद करते हैं, यतीमों और बेवाओं को सहारा देते हैं, मेहमानों की ख़िदमत करते हैं, लोगों का बोझ उठाते हैं। आप को किस बात का डर है।"

अल्लाह का पैग़ाम आया। आपने दूसरों तक पहुंचाना शुरू किया। लागों से कहते "अल्लाह एक है। वही सबका पैदा करने वाला है। वही सब को खिलाता और पिलाता है। वही सबका हाकिम है, स्वामी और मालिक है। तुम सब उसी का

हुक्म मानो। उसी की बन्दगी करो, वही तुम सबका माबूद है। मैं अल्लाह का रसूल हूं। उसका हुक्म तुम्हें सुनाता हूं। उसकी मर्ज़ी बताता हूं। मेरा कहा मानो, बुराइयों से बचो, भले काम करो, मरने के बाद उठाये जाओगे, मालिक के पास लाये जाओगे, वह तुम्हारे सारे कामों का हिसाब लेगा। जिसने अच्छे काम किये होंगे, अल्लाह उनसे ख़ुश होगा। उन्हें रहने के लिये जन्नत देगा। बुरे आदमियों से अल्लाह नाराज़ होगा, उन्हें बहुत कड़ी सज़ा देगा और सदा का अज़ाब भुगतने के लिए दोज़ख़ में डाल देगा।"

अच्छे लोग आपकी बात मान गये। हज़रत अबू बक्र आपके गहरे दोस्त थे। मर्दों में सबसे पहले वे ईमान लाये। हज़रत ख़दीजा आपकी नेक बीवी थीं। औरतों में वह सबसे पहले ईमान लाईं। हज़रत अली आप के चचेरे भाई थे, लड़कों में सबसे पहले वे ईमान लाये, हज़रत ज़ैद आपके ग़ुलाम थे, ग़ुलामें में सबसे पहले वे ईमान लाये। यह चारों बहुत नेक थे। आपके साथ रहते थे। आपकी अच्छाइयों को जानते थे। आपकी बात सुनते ही उसे सच जाना, फ़ौरन ईमान ले आये। अल्लाह इन सब से राज़ी हो।

कुछ समय बाद अल्लाह का हुक्म आया, "अपने भटके हुए भाइयों को अल्लाह के अज़ाब से डराओ।" आपने

ऐसा ही किया। मक्के के पास एक पहाड़ी है उसका नाम 'सफ़ा' है। आप इस पहाड़ी पर चढ़ गये और मक्के वालों को पुकारा। जब सब लोग इकट्ठे हो गये तो आप ने फ़रमाया:

"मैं पहाड़ी के ऊपर हूं, तुम पहाड़ी के नीचे। मैं पहाड़ी के इस पार भी देख रहा हूं, उस पार भी, लेकिन तुम सिर्फ़ एक ही ओर देख रहे हो। अगर मैं कहूं कि इस पहाड़ी के पीछे डाकुओं की एक टोली है जो तुम पर धावा करने वाली है तो क्या तुम यक़ीन करोगे?"

सब ने एक साथ कहा, "यह सच है! आप ऊपर हैं, चारों ओर देख रहे हैं। आप सच्चे हैं, अमीन हैं। आप कभी झूठ नहीं बोलते। हम आप की बात पर भरोसा करते हैं। आप की बात को सच मानेंगे।"

फिर आप ने फ़रमाया, 'लोगो! तुम्हारे समझने के लिए यह तो एक बात थी। तुम मान लो, मौत तुम्हारे सर पर खड़ी है, तुम्हें एक दिन मरना है, मर कर अल्लाह के पास जाना है। अपने किये का बदला पाना है। अगर तुम ईमान लाकर ठीक न बने और तुमने भले काम न किये, तो तुम पर कोई बड़ा अज़ाब आयेगा। तुम केवल दुनिया को देख रहे हो। आख़िरत तुम्हारे सामने नहीं है। मैं आख़िरत को भी देख रहा हूं और तुम्हें वह बात बता रहा हूं जो तुम नहीं जानते।"

मक्के वालों ने आपकी नसीहत सुनी । कैसी सच्ची बातें थीं । प्यारे रसूल (स०) ने कैसे अच्छे ढंग से समझाया था । सब आपको सच्चा जानते थे, इस सच्ची बात पर यक़ीन न किया, आपको बुरा कहने लगे । बुरा कहने वालों में अबू लहब भी था । अबू लहब आपका चचा था ।

सताये गये

आपने अल्लाह का पैग़ाम सुनाया। लोगों को बुरी बातों से रोका, भले कामों पर उभारा। नेक लोग मान गये, मान कर मुसलमान हो गये, अल्लाह के सच्चे बन्दे बन गये, प्यारे नबी का साथ देने लगे। बुरे लोगों ने इनकार किया, सुनी अनसुनी कर दी। आप उनका भला चाहते थे, वह उल्टे आपके दुश्मन बन गये। पहले आप को डराया धमकाया, फिर लालच दिया। जब यों काम न चला तो आपको सताने लगे। रास्ता चलते छेड़ते, गालियां देते, बुरी-बुरी बातें कहते, पत्थर मारते, रास्ते में कांटे बिछा देते, आप पर कूड़ा-करकट डालते, कीचड़ उछालते। आप दुख सहते और सब्र करते। लोगों को सीधी राह दिखाते, अच्छी बातें सिखाते, उनके लिए अल्लाह से दुआ करते, 'ऐ अल्लाह, तू इन्हें नेक बना दे।' लेकिन इन ज़ालिमों का ज़ुल्म बढ़ता गया। आपके पूरे ख़ानदान का बायकाट कर दिया गया। उनका खाना-पानी बन्द कर दिया गया। बच्चे भूख से बिलकने लगे। फ़ाक़े पर फ़ाक़े होने लगे। पत्ते चबाकर दिन काटने पड़े। कुछ दिन बाद आपके अच्छे चचा अबू तालिब चल बसे। प्यारी बीवी हज़रत ख़दीजा चल बसीं। इन दोनों से आपको बड़ी ढारस रहती थी। उनके मरने से आपको बहुत दुख हुआ। काफ़िर पहले अबू तालिब से डरते थे। उनके

मरने पर अब जी भर सताने लगे।

एक बार आप काबे में नमाज़ पढ़ रहे थे कि एक ज़ालिम ने देखा। अपनी चादर लपेटकर फंदा बनाया, और आपके गले में डाल दिया। आप सज्दे में गये तो बेदर्दी से खींचने लगा। इतने में हज़रत अबू बक्र आ गये। आपने टोका तो काफ़िरों ने आपको भी पीटा।

काफ़िरों का एक सरदार अबू जहल था। वह भी आपका जानी दुश्मन था। नमाज़ पढ़ते में उसने आप पर ऊंट की औझ डलवा दी। आपकी प्यारी बेटी बीबी फ़ातमा ने सुना, दौड़ी हुई आईं, ओझ को दूर फेंका, गन्दगी साफ़ की और इन मूर्खों को बहुत समझाया।

आपके प्यारे साथियों को भी काफ़िर बहुत सताते थे। आप के एक प्यारे साथी हज़रत बिलाल थे (अल्लाह उनसे राज़ी हो) वह एक काफ़िर के ग़ुलाम थे। जब उसने सुना कि हज़रत बिलाल मुसलमान हो गये हैं तो उसने उन्हें सताना शुरू किया। कई-कई दिन भूखा रखता। मारता, पीटता, गरम रेत पर लिटाता, छाती पर पत्थर रखता। गले में रस्सी बांध कर लड़कों को दे देता, वह उन्हें पत्थरों में घसीटते फिरते। हज़रत बिलाल भी अल्लाह की राह में दुख उठाते और सब्र करते।

आपके एक साथी हज़रत ख़ुबाब थे। जब आप मुसलमान हुए तो काफ़िरों ने आपको भी बहुत सताया। एक दिन काफ़िरों

ने कोयले जला कर ज़मीन पर बिछा दिये। उस पर इन्हें चित्त लिटा दिया। छाती पर पांव रखे रहे ताकि करवट न ले सकें। आप-की सारी पीठ जल गयी।

हज़रत यासिर आपके एक और प्यारे साथी थे। अबू जहल ने उनके सारे ख़ानदान को बहुत सताया। बाल-बच्चों को बड़े-बड़े दुख दिये। उनकी नेक बीवी को इस ज़ालिम ने बरछा मारकर शहीद ही कर डाला।

इस तरह अल्लाह के इन नेक बंदों को तरह-तरह से परेशान किया गया। भला सोचो तो सही, इन बेचारों नें इनका क्या बिगाड़ा था। बात तो यही थी न कि वे खुद नेक थे, अल्लाह के हुक्मों पर चलते थे, दूसरों को भी नेकी की बातें सुनाते थे, अल्लाह के हुक्मों पर चलने को कहते थे। इस काम के लिये किसी से कुछ मांगते न थे।

बात यह थी कि क़ुरैश के सरदार बहुत बुरे थे। वे लोगों को अपनी मर्ज़ी पर चलाते और उनपर ख़ुदाई ठाठ जमाते थे। जब उन्होंने देखा कि प्यारे रसूल की प्यारी बातें लोगों का दिल मोह लेती हैं, वे औरों का हुक्म ठुकरा कर अल्लाह का हुक्म मानने के लिये तैयार हो जाते हैं तो उन्हें यह डर हुआ कि अगर इस्लाम फैला तो हमारी सरदारी चली जायेगी। हमें कोई बड़ा न मानेगा। इसी लिये वे सब ज़ुल्म करते थे। लोगों को अल्लाह के रास्ते पर

चलने से रोकते थे । पर अल्लाह के इन नेक बन्दों के पांव न डगमगाये । ये लोग दुख सहते रहे और अल्लाह के दीन पर जमे रहे । (अल्लाह इन सब से राज़ी हो ।)

हब्शे की हिज्रत

काफ़िरों ने मुसलमानों को बहुत दुख दिये । प्यारे रसूल को सताया, आप के प्यारे साथियों को सताया । जब पानी सिर से ऊंचा हो गया, क़ुरआन पढ़ना, अल्लाह की इबादत करना, दीन पर चलना, दूसरों को दीन की बातें बताना, सब दूभर हो गया तो आप ने मुसलमानों से फ़रमाया "तुमने दीन के लिये बहुत दुख सहे । अब जो चाहे हब्शा चला जाये । इस देश का बादशाह नज्जाशी है । नज्जाशी बहुत नेक है । वहां कोई रोक-टोक नहीं है । आज़ादी से अल्लाह के दीन पर चल सकोगे । वहां दीन फैलाने का भी मौक़ा मिलेगा ।" यह सुनकर बहुत से मुसलमान घर-बार छोड़कर हब्शा चले गये । यह प्यारे नबी के साथियों की पहली हिज्रत थी ।

काफ़िरों ने अब भी चैन न लेने दिया । पीछा करने हब्शा पहुंचे, नज्जाशी से मुसलमानों की झूठी शिकायत की । मुसलमान दरबार में बुलाये गये । उनमें हज़रत अली के भाई हज़रत जाफ़र

भी थे। हज़रत जाफ़र मुसलमानों के सरदार थे। उन्होंने दरबार में एक तक़रीर की। तक़रीर बहुत अच्छी थी। उन्होंने फ़रमाया :—

"ऐ बादशाह ! हम अनजान थे, जाहिल थे, बुत पूजते, मुरदार खाते, बद-कारी करते, गालियां बकते, नापाक रहते और आपस में लड़ते थे। अमीर ग़रीबों पर ज़ुल्म करते थे। अपने पड़ोसियों से अच्छा सुलूक न करते थे। भाई-भाई से लड़ता था। ताक़तवर कमज़ोर को सताता था। क्या-क्या बतायें, हम बुरे थे, हमारे सारे काम बुरे थे। अल्लाह ने हम पर रहम किया। हमें सीधा रास्ता दिखाने का इन्तिज़ाम किया। हम में अपना एक रसूल भेजा। हम सब उस को जानते थे। वह बहुत ही नेक था, सच्चा और अमीन था। उसने हमको सीधी राह दिखाई। सच्चे दीन की ओर बुलाया। अल्लाह का रास्ता बताया। आपस में प्यार करना सिखाया। उसने हमें समझाया कि हम बुत पूजना छोड़ दें। अल्लाह की इबादत करें, सच बोलें, वायदे पूरे करें, बुराइयों से बचें, गुनाहों से दूर रहें, यतीमों का माल न खायें, फ़साद और बिगाड़ न मचायें, पड़ोसियों को न सतायें, उन्हें सुख पहुंचायें, औरतों पर ज़ुल्म न करें, नमाज़ पढ़ें, रोज़ा रखें, अल्लाह की ख़ुशी के लिये अपना माल दें, आपस में मिलजुल कर रहें और एक दूसरे को अपना भाई जानें। हमने उसे नबी जाना, अल्लाह का रसूल माना, उसकी

बातों पर चलने लगे। यह देख कर हमारी क़ौम के लोग हमारे दुश्मन हो गये, हमें सताने लगे। इसी लिये हम अपना देश छोड़कर यहां चले आये।

बादशाह ने हज़रत जाफ़र की बातें सुनी। आप की बातें बहुत अच्छी थीं। बादशाह बड़े ध्यान से सुनता रहा। उसने इन की बातों को सच जाना। फिर उसने क़ुरआन सुना, क़ुरआन सुन कर रोने लगा। काफ़िरों को निकलवा दिया। मुसलमानों के साथ अच्छा सुलूक किया। कुछ दिन बाद नज्जाशी भी मुसलमान हो गया। अभी प्यारे नबी ने हिजरत नहीं की थी। आप हब्शा नहीं गये मक्के में जमे रहे, दुख सहते रहे, अल्लाह की ओर बुलाते रहे। आप मेलों में जाते, मंडियों में जाते, हज के समय पर, लोगों को दीन की बातें बताते। धीरे-धीरे मक्के के बाहर दीन फैलने लगा।

मक्के के पास एक बस्ती है। उसका नाम ताइफ़ है। दीन की बातें बताने आप ताइफ़ गये। ताइफ़ के लोग बहुत बुरे थे। उन्होंने आप की बातें नहीं सुनीं। आप के साथ बहुत बुरा सुलूक किया। पत्थरों से मारा, गालियां दीं, सताने के लिये छोटे-छोटे बच्चे पीछे लगा दिये। आप लहूलुहान हो गये, मगर उनके लिये बद-दुआ न की, बल्कि अल्लाह से उनके लिये यही दुआ करते रहे: "ऐ अल्लाह इन्हें सीधी राह दिखा दे"।

मक्के से मदीने

मदीना अरब का एक मशहूर नगर है। यह मक्के से बहुत दूर है। मदीने के लोग हर साल मक्के जाते, मक्के जाकर हज करते। प्यारे रसूल उनसे मिलते, चुपके-चपके उन्हें दीन की बातें बताते। मदीने के लोग नेक थे। वे प्यारे रसूल की प्यारी बातें ध्यान से सुनते। उनमें बहुत से मुसलमान हो गये। इस प्रकार अल्लाह का दीन मदीने पहुंचा।

मक्के के काफ़िरों की शरारत बढ़ती गई। उन्होंने प्यारे रसूल को बहुत सताया। जब उनमें हज़रत की बातें सुनने वाला कोई न रहा और ख़ुद प्यारे रसूल ही का काम तमाम कर देने की सोचने लगे तो अल्लाह ने आप को मदीने जाने का हुक्म दे दिया।

एक रात काफ़िरों ने यह तय कर लिया कि छी! छी!! प्यारे रसूल को जान से मार दिया जाये। इस काम के लिये इन ज़ालिमों ने यह तरकीब सोची कि हर क़बीले का एक-एक आदमी लिया जाये। सब मिलकर प्यारे रसूल का घर घेर लें और जब आप घर से निकलें तो सब एक साथ टूट पड़ें और आप को जान से मार दें। अल्लाह ने आप को इस बात का पता दे दिया। आप अल्लाह का नाम ले कर घर से निकल

खड़े हुए। काफ़िर घर घेरे हुए थे। परन्तु उन्हें सुझाई ही न दिया। प्यारे रसूल को कोई न देख सका। आपके साथ आपके प्यारे दोस्त हज़रत अबू बक्र भी निकले, दोनों मक्के से बाहर गये। मक्के से बाहर एक गुफा है। उसका नाम सौर है। दोनों सौर की गुफा में छुप गये। काफ़िरों ने पीछा किया। चारों ओर जासूस दौड़ाये। एक आदमी तो गुफा के मुहं तक पहुंच गया। हज़रत अबू बक्र डरे। आपने फ़रमाया, "डरो नहीं! अल्लाह हमारे साथ है।" अल्लाह ने उस काफ़िर की अक़्ल मार दी, वह कुछ देख न सका। सच है जिसे अल्लाह ज़िन्दा रखना चाहे, उसे कौन मार सकता है।

तीन दिन बाद वहां से आगे चले। मदीने के लोग रास्ता देख रहे थे। पहुंचे तो बहुत ख़ुश हुए। छोटी बच्चियां तो ख़ुशी के मारे गीत गाने लगीं। हर एक चाहता था, हज़रत हमारे घर ठहरें।

धीरे-धीरे बहुत से मुसलमान घर बार छोड़कर मदीने चले गये। हब्शा के मुसलमान भी मदीने आ गये। ये सब लोग हिजरत करके आये थे। ये लोग मुहाजिर कहलाये। मदीने वालों ने उनकी मदद की। रहने-सहने को घर दिये। अपने यहां शादी-विवाह कर दिया। कारोबार में साझी कर लिया। यह मदद देने वाले मदीने के मुसलमान

अंसार (मददगार) कहलाये।

मुहाजिर और अंसार भाई-भाई हो गये। इन भाइयों में इतना प्यार था कि सगे भाइयों में भी नहीं होता है। हज़रत ने इन सब में बड़ा सच्चा और पक्का भाईचारा करा दिया था। मुसलमान के लिये ऐसे मुश्किल वक़्त में यह जमाअत अल्लाह की बड़ी रहमत थी।

लड़ाइयाँ

प्यारे नबी बहुत ही रहम-दिल थे। आप तो दुनिया के लिये रहमत बन कर आये थे। आप सब का भला चाहते, सबके साथ नेक सुलूक करते। पत्थर मारने वालों को भी दुआयें देते। दीन के लिये घर-बार छोड़ा। हिजरत करके मदीने गये, सोचा था कि वहां सुख से रहेंगे, सब को अल्लाह का पैग़ाम पहुंचायेंगे, मुसलमानों को अल्लाह की मर्ज़ी पर चलायेंगे, परन्तु काफ़िरों ने वहां भी चैन न लेने दिया। मदीने जा-जाकर चढ़ाई करते। मदीने के आस-पास यहूदी बसते थे, यह अपने को हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) की उम्मत कहते थे, मगर काम सारे काफ़िरों जैसे करते थे। ये लोग भी प्यारे नबी के दुश्मन बन गये। काफ़िरों से मिल कर आप को धोखा देने लगे। मुसलमानों की बातें काफ़िरों

तक पहुंचाते, झूठी बातें बनाकर लड़ाई पर उभारते। मदीने में कुछ लोग मुनाफ़िक थे। ये देखने में मुसलमानों के दोस्त मगर दिल से उनके दुश्मन थे। ये लोग भी काफ़िरों से मिलकर मुसलमानों को धोखा देते थे।

एक बार झूठी ख़बर सुनकर काफ़िरों ने मुसलमानों पर धावा बोल दिया। अल्लाह तआला ने मुसलमानों को भी लड़ाई का हुक्म दे दिया। काफ़िर बहुत ज़्यादा थे, मुसलमान बहुत कम थे। काफ़िर एक हज़ार से ऊपर थे, मुसलमान केवल तीन सौ तेरह थे। काफ़िरों के पास बहुत सामान था। मुसलमान निहत्थे थे। बद्र के स्थान पर दोनों में मुठभेड़ हुई। बड़ी घमासान की लड़ाई हुई। मुसलमान सच्चे थे, प्यारे नबी सच्चाई पर थे। अल्लाह ने मदद की। मुसलमान जीत गये, काफ़िर हार गये। काफ़िरों के बड़े-बड़े सरदार मारे गये। अबू जहल मारा गया, उतबा मारा गया, शेबा मारा गया। काफ़िरों के सत्तर आदमी मारे गये, सत्तर पकड़े गये, बाक़ी अपना सा मुंह लेकर भाग गये।

दूसरे साल काफ़िरों ने बहुत बड़ी सेना इकट्ठी की। मुसलमानों पर फिर धावा किया। उहद के पास लड़ाई हुई। मुसलमान कम थे, मगर अल्लाह की मदद से फिर जीत गये। ख़ुशी में कुछ मुसलमान एक घाटी के पहरे से हट गये। काफ़िरों ने फिर धावा कर दिया, जिस से मुसलमान घबरा गये। उनके पैर उखड़

गये। कई बहादुर मुसलमान शहीद हो गये। आपके बहादुर चचा हज़रत हम्ज़ा (अल्लाह उनसे राज़ी हो) इसी लड़ाई में शहीद हुए। हुज़ूर के दो दांत भी शहीद हो गये। हज़रत इस लड़ाई में भी जमे रहे। अल्लाह पर भरोसा था, अल्लाह की मदद आई। मुसलमान फिर सम्भले। आख़िर में मुसलमान जीत गये और काफ़िरों को भागना पड़ा।

काफ़िरों से मुसलमानों की और बहुत सी लड़ाइयां हुईं। लड़ाइयों में मुसलमान कम होते, काफ़िर ज़्यादा होते। मुसलमान निहत्थे होते और काफ़िर हथियारों और सामान से लदे हुए होते। लेकिन मुसलमान सच्चाई पर होते और अल्लाह के लिये लड़ते, और काफ़िर अपने लिये लड़ते। इस लिये अल्लाह मुसलमानों की मदद करता, काफ़िरों को मुंह की खानी पड़ती।

आख़िर में थक कर काफ़िरों को लड़ाई बंद करते ही बनी। मुसलमानों और काफ़िरों में समझौता हो गया।

मक्के की विजय

काफ़िरों और मुसलमानों में कुछ दिन लड़ाई बन्द रही। काफ़िरों ने फिर गड़बड़ शुरू की। कई मुसलमानों को काबे में शहीद किया। यह सुनकर प्यारे रसूल ने दस हज़ार मुसलमान साथ लिये और मक्के की ओर चल पड़े। काफ़िर सटपटा गये। कुछ तो घर-बार छोड़ कर भाग गये, कुछ ने माफ़ी मांग ली और मुसलमान हो गये। प्यारे रसूल ने सब को माफ़ कर दिया। जिन्होंने सताया था उन्हें भी छोड़ दिया। अब मक्के पर मुसलमानों का क़ब्ज़ा हो गया। काबे को बुतों से पाक किया गया। धीरे-धीरे सारे अरब में इस्लाम का डंका बज गया।

प्यारे नबी का काम पूरा हो गया। आप ने अल्लाह का पैग़ाम पहुंचा दिया। अल्लाह के दीन पर चल कर दिखा दिया। दीन फैलाने के लिये मुसलमानों की एक बहुत बड़ी जमाअत तैयार कर दी। अब अल्लाह ने आप को अपने पास वापस बुला लिया।

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मद व अला
आलि मुहम्मद व बारिक व सल्लिम

दीन पूरा हो गया। अब प्यारे नबी के बाद कोई नबी न आयेगा। दीन की बातें बताने का काम अब मुसलमानों

के ज़िम्मे है। हर ज़माने के मुसलमान अपने समय के इनसानों तक दीन पहुंचाने के ज़िम्मेदार हैं। अल्लाह का शुक्र है, हम भी मुसलमान हैं। इस्लाम फैलाने की ज़िम्मेदारी हमारे कमज़ोर कन्धों पर है। प्यारे नबी ने दीन के लिये दुख सहे हैं। हम भी दुख सहेंगे और सारी दुनिया में दीन फैला कर रहेंगे।

ऐ अल्लाह! हम को ताक़त दे, हम से अपने दीन का काम ले ले, हम तेरे दीन पर जमे रहें। नेकी के रास्ते पर चलते रहें और दूसरों को नेकी की बातें बताते रहें। उन्हें तेरे रास्ते की ओर बुलाते रहें। ऐ अल्लाह तू ही हमारा सहारा है और तेरी ख़ुशी हमारा सब से अच्छा बदला है। (आमीन)

आप कैसे थे ?

आप बहुत अच्छे थे, आप के सारे काम अच्छे थे। दीन दुनिया की सारी भलाइयां आप के अन्दर थीं। हम आप की ख़ूबियां कहाँ तक बतायें। छोटा मुँह बड़ी बात।

आपकी तारीफ़ तो ख़ुदा ने की है। किसी ने आप की प्यारी बीवी हज़रत आइशा से पूछा, "आप कैसे थे ?"

वह बोलीं "क़ुरआन में जितनी अच्छाइयां बयान हुई हैं, सब आप में थीं। आप क़ुरआन का सच्चा नमूना थे —।"

आप पाक-साफ़ रहते। गन्दगी से आप को नफ़रत थी। आप सफ़ाई को आधा ईमान बताते। ग़ुस्ल करते, साफ़ कपड़े पहनते, इत्र लगाते, रोज़ मिस्वाक करते।

खाना खुशी-ख़ुशी खाते, खाने को बुरा न कहते। अपने सामने से खाना शुरू करते, इधर-उधर हाथ न डालते, खाते समय टेक लगाकर न बैठते, भूख से ज़्यादा न खाते, खाते ही न सो जाते, भरे पेट पर कुछ न खाते, ऐसा करने से मना फ़रमाते। आप ने पेट को बीमारी की जड़ बताया है।

अपना काम आप कर लेते, किसी का सहारा न तकते,

दूसरों का भी काम कर देते, जानवरों को चारा डालते, उनकी ख़िदमत करते, उनका दूध दुहते। झाड़ू देते, आटा गूंध लेते, कपड़े धो लेते, बाज़ार से सौदा उठा लाते, जूते गांठ लेते, मकान की मरम्मत कर लेते। कभी बेकार न बैठते, काम-काज में लगे रहते, सब के काम करते, दूसरों से काम लेना पसन्द न करते।

बहुत सादा रहते, चमकीले और भड़कदार कपड़े न पहनते, मर्दों को सोना और रेशम पहनने से मना करते, मोटे-झोटे कपड़े पहनते, मामूली बिस्तर पर सोते, घरों को बहुत ज़्यादा सजाना आप ना-पसन्द फ़रमाते। एक बार आप की प्यारी बेटी बीबी फ़ातमा ने दावत की, आप तशरीफ़ ले गये। पहुंचे तो देखा कि दीवारों पर परदे लटक रहे थे, आप ना ख़ुश होकर लौट आये, सबब पूछा तो फ़रमाया :

"किसी सजे हुये मकान में जाना नबी की शान के ख़िलाफ़ है।"

एक बार घर तशरीफ़ लाये, देखा हज़रत आइशा ने कपड़े की छतगीरी लगा रखी थी। आप ने फ़ौरन हटा दी। बोले "अल्लाह ने दौलत इस लिये नहीं दी है कि ईंट पत्थर को कपड़ा पहनाया जाये।"

आप अपने बड़ों की इज़्ज़त करते थे। एक बार आप की दूध अम्मा आईं। आपने बहुत ख़ातिर की। उनके बैठने को

अपनी चादर बिछा दी ।

आप वायदा कर लेते तो ज़रूर पूरा करते, नबी होने से पहले की बात है, एक आदमी ने आप से कुछ बात-चीत की, आप को बिठाकर वह किसी काम से चला गया । तीन दिन के बाद वापस आया तो देखा आप वहीं बैठे उसका रास्ता देख रहे थे ।

आप किसी से कभी बदला न लेते । मक्के वालों ने आप को इतना सताया, मारा पीटा, घर से बे-घर किया, जान लेने के पीछे पड़ गये । मगर जब वे आप के बस में आये तो आप ने उन्हें कुछ न कहा, माफ़ कर दिया । ताइफ़ वालों ने पत्थर मारे, मगर मक्के की फ़त्ह होने पर जब वहा के लोग आपके पास आये तो आप ने उनकी बड़ी इज़्ज़त की ।

आप जानवरों पर बहुत रहम करते । एक जगह एक चिड़िया ने अंडे दिये थे । किसी ने वे अंडे उठा लिये । चिड़िया तड़पने लगी । हुज़ूर को पता चला तो आपने अंडे वहीं रखवा दिये ।

एक बार एक सहाबी चिड़ियों के कुछ बच्चे उठा लाये । आपके पास आये तो आप ने कहा "बच्चों को उनकी माँ के पास छोड़ आओ।"

बच्चों से प्यार

बच्चों से आप बड़ा प्यार करते, बच्चे भी आपसे बहुत प्यार करते। गली, कूचों में आप को देख कर उछलने कूदने लगते, आ-आकर आप से मिलते, आप सब को सलाम करते, गोद में उठाते, प्यार करते, दुआयें देते।

मक्के से जब आप मदीने पहुंचे तो अंसार की छोटी-छोटी बच्चियां घरों से निकल पड़ीं और मारे ख़ुशी के गीत गाने लगीं। आप उनके पास से गुज़रे तो फ़रमाया :

"बच्चियो ! क्या तुम मुझे प्यार करती हो ?" सब ने कहा हां, या रसूलल्लाह !"

फ़रमाया "मैं भी तुम्हें प्यार करता हूँ।"

एक बच्चा ढेले मार कर दूसरे के पेड़ों से खजूरें गिरा लिया करता था। लोग उसे पकड़ कर प्यारे रसूल के पास लाये, आप ने पूछा :

"तुम ढेले क्यों मारते हो ?"

बोला "खजूरें ख़ाने के लिए।"

आपने उसे मारा-पीटा नहीं, बल्कि मुहब्बत से समझा दिया, और सर पर हाथ फेर कर दुआ दी।

हज़रत हसन और हज़रत हुसैन (अल्लाह इन दोनों से राज़ी हो) आपके नवासे थे। आप उन से बहुत प्यार करते। दोनों नन्हें मुन्ने थे। आप उनके साथ खेलते, उन्हें गोद में लिए फिरते,

कंधों पर बिठाते, पीठ पर चढ़ाते। दोंनों नमाज़ में भी आप से चिमट जाते, सज्दे में आपके ऊपर सवार हो जाते, आप कुछ न कहते, नमाज़ पढ़कर उन्हें उठा लेते और प्यार करते। आप ने कभी किसी बच्चे को नहीं पीटा। आप बच्चों को पीटने से मना करते थे।

आप जब सफ़र से लौटते तो जो बच्चे रास्ते में मिलते, उन्हें अपने साथ सवारी पर आगे पीछे बिठा लेते।

एक बार आप कहीं दावत में जा रहे थे। हज़रत हुसैन रास्ते में खेल रहे थे। आप ने आगे बढ़ कर हाथ फैला दिये, वह हंसते हुए पास आकर निकल जाते, आख़िर आपने उन्हें पकड़ लिया और मुहब्बत से फ़रमाया, "हुसैन मेरा है और मैं हुसैन का हूं।"

आपकी यह मुहब्बत कुछ मुसलमान बच्चों के लिए ही न थी, बल्कि हर बच्चे से आप इसी तरह प्यार करते। एक बार किसी लड़ाई में कुछ बच्चे भी झपेट में आकर मारे गये। आपने सुना तो बहुत दुखी हुए।

एक सहाबी बोले "या रसूलल्लाह वे बच्चे मुसलमानों के न थे।"

आपने फ़रमाया "तुम से अच्छे थे, ख़बरदार ! बच्चों को कभी क़त्ल न करना।"

ज़ैद बिन हारिस एक बहुत ही प्यारे बच्चे थे। उन्हें कुछ

बुरे लोगों ने चुपके से लाकर बाज़ार में बेच दिया। हज़रत ख़दीजा ने मोल ले लिया, प्यारे नबी की ख़िदमत के लिए उनके पास भेज दिया। आप ने ज़ैद को अपना मुंह बोला बेटा बना लिया। आप उन से बहुत प्यार करते थे। जब ज़ैद के बाप और चचा को पता चला तो लेने के लिए आये, लेकिन ज़ैद उनके साथ जाने को तैयार न हुए। बोले :

मैं अपने प्यारे नबी को अपने बाप और चचा से बढ़ कर समझता हूं।

प्यारे बच्चो ! ऐसे प्यारे नबी को कौन मां-बाप से बढ़ कर न समझेगा ? हम भी आप को तमाम दुनिया से ज़्यादा प्यारा समझते हैं। आप की कोई बात सुनते हैं तो फ़ौरन मान लेते हैं। नाम आता है तो दुरूद व सलाम भेजते हैं।

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मद, वअला आलि मुहम्मद, व बारिक व सल्लिम।

प्यारे रसूल की प्यारी बातें

१. कहो कि मैं ईमान लाया और फिर उसी पर जमे रहो।
२. मैं आख़िरी नबी हूं, मेरे बाद अब कोई नबी न आयेगा।
३. सात साल की उम्र से बच्चों को नमाज़ पढ़ने को कहो।
४. नमाज़ अपने वक़्त पर अदा करो।
५. नमाज़ में अपनी सफ़ों को सीधा करो।
६. नमाज़ में कनख़ियों से देखना तबाही है।
७. रुकू या सज्दे में इमाम से पहले सिर उठाने वाले का सिर अल्लाह मियां कहीं गधे के सर के समान न कर दें।
८. जन्नत मां के क़दमों तले है।
९. अल्लाह की ख़ुशी बाप की ख़ुशी में है। अल्लाह की नाराज़ी बाप की नाराज़ी में है।
१०. मां-बाप को गाली देना या बुरा कहना बहुत बड़ा गुनाह है। और यह भी गाली देना है कि कोई बच्चा दूसरे के मां-बाप को गाली दे या बुरा कहे और वह जवाब में उसके मां-बाप को गाली दे या बुरा कहे।
११. बड़े भाई का दर्जा बाप के बराबर है।

१२. जिस घर में बच्चे नहीं उसमें बरकत नहीं।
१३. गोद से गोर तक इल्म हासिल करते रहो।
१४. जिससे इल्म सीखो, उसकी इज़्ज़त करो।
१५. सफ़ाई आधा ईमान है।
१६. जुमे का ग़ुस्ल हर नवजवान पर वाजिब है। मिस्वाक करना और ख़ुशबू भी लगाना चाहिए।
१७. दिन चढ़े तक सोना रोज़ी का खोना है।
१८. सलाम किया करो, इससे मुहब्बत बढ़ेगी।
१९. छोटे बड़े को, चलने वाला बैठे हुए को और छोटी टोली बड़ी टोली को सलाम करे।
२०. खाना बिस्मिल्लाह कह कर शुरू करो। शुरू में भूल जाओ तो आख़ीर में कहो।
२१. जो जी चाहे वही खा लेना, माल बरबाद करना है।
२२. बीमार के सामने बैठ कर मत खाओ।
२३. बाज़ार में खाना बहुत बुरी बात है।
२४. पेट सब रोगों का घर है। भूख से कम खाना असली इलाज है।
२५. हुज़ूर ने पीने के बर्तन में फूंक मारने से रोका है।
२६. अल्लाह तआला औंधा लेटने को पसन्द नहीं करता।
२७. पानी में अपनी छाया नहीं देखनी चाहिए।
२८. जिसने रास्ते में पाख़ाना किया उस पर अल्लाह की, फ़रिश्तों

की, और सब लोगों की लानत है।

२९. देकर लेने वाला उस कुत्ते जैसा है जो उलटी कर के चाटता है।

३०. अंधे को ग़लत रास्ता बताने वाले पर लानत है।

३१. जो बिना इजाज़त किसी के घर में झांके उसकी आंखें फोड़ देना जायज़ है।

३२. झूठ से आदमी का मुंह काला होता है।

३३. चुग़ली खाने वाला जन्नत में न जायेगा।

३४. ग़ुस्सा मत करो।

३५. किसी की नक़ल उतारना भी ऐसा है जैसे पीठ पीछे बुरा कहना।

३६. मुसलमान को गाली देना अल्लाह की ना-फ़रमानी है।

३७. किसी की मुसीबत पर न हंसो, ऐसा न हो तुम ख़ुद मुसीबत में फंस जाओ।

३८. जो एक चिड़िया को खेल-खेल में बिना किसी फ़ायदे के मारेगा क़यामत के दिन वह चिड़िया उसके ख़िलाफ़ फ़रियाद करेगी।

३९. हर जीव पर दया करने से सवाब मिलता है।

४०. चिड़ियों पर रहम करने वाला अल्लाह की रहमत का अधिकारी है।

हम पर आप का हक़

प्यारे बच्चो ! तुम ने हज़रत के बारे में पढ़ा । अल्लाह की बड़ी मेहरबानी थी कि उसने आप को भेजा । आप सब से अच्छे थे । हम पर आप के बहुत एहसान हैं । आप ने अल्लाह की मर्ज़ी बताई, ख़ुद इस पर चल कर दिखाया । आप क़ुरआन लाये । हमको इस्लाम की दौलत से मालामाल किया । अगर आप न आते तो न जाने दुनिया का क्या हाल होता । लोग इधर उधर भटकते फिरते । सच्चा-सीधा रास्ता न पाते । दूसरों को सताते, अपने आप पर ज़ुल्म करते, दुनिया में दुख होता । आख़िरत में ज़लील होते । आप ही की तालीम ने हमें भटकने से बचा लिया । आप का हम जितना भी एहसान मानें कम है ।

आप से पहले दुनिया में अंधेरा छाया था । हर तरफ़ बुराइयां फैली थीं । लोग आपस में लड़ते थे । बुरे-बुरे काम करते थे, यतीमों और बेवाओं को सताते, कमज़ोरों को दुख देते । नन्हीं बच्चियों को ज़िन्दा गाड़ देते, औरतों को ज़िन्दा जला देते । आपने लोगों को बुरे कामों से रोका, भले कामों पर उभारा, भले लोगों की तरह रहना सिखाया, लोगों की भलाई के लिए दुख उठाये, मारे गये, घर से

बे घर हुए। आप ने सब कुछ सहा, और अपना काम करते रहे। अल्लाह ने आप की मदद की, बुराइयां कम हुईं, ज़ुल्म दूर हुआ, लोगों ने अल्लाह का दीन सीखा, सीधा और सच्चा रास्ता पाया। आज दुनिया में जितनी भलाइयां और नेकियां पाई जाती हैं वे सब आप की ही तालीम और मेहनत का फल है। आप ने इन सारे कामों के लिए कभी किसी से कुछ बदला नहीं मांगा। सब कुछ सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशी के लिए करते रहे।

आपके इन एहसानों का हम क्या बदला दे सकते हैं ? यही न की आप जो कुछ अल्लाह की ओर से लाये हैं, उसको दिल से मानें, आप के जीवन को अपने लिए नमूना बनाएं, आप का हुक्म मानें, आप की ख़ुशी के लिए काम करें, उन बातों से बचें जो आप को पसन्द नहीं थीं, वे काम करें जो आपको पसन्द थे। आप ने दीन के लिए दुख झेले, नेकियां फैलाने में सारा जीवन लगा दिया।

आओ हम भी अल्लाह का दीन सारी दुनिया में फैलायें। लोगों को नेकियों पर उभारें, बुराइयों से रोकें, और यह सब काम सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशी के लिए करें, किसी और लालच से न करें।

सब से ज़्यादा आप से मुहब्बत करें। इज़्ज़त से आप का नाम लें, नाम आते ही दुरूद व सलाम भेजें, कहीं आप

का नाम लिखा हो या किसी से आप का नाम सुनें, ख़ुद लिख रहे हों या अपनी ज़ुबान से आप का नाम ले रहे हों तो सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कह दिया करें। जिस काग़ज़, किताब या चीज़ पर आप का नाम लिखा हो संभाल कर रखें, इधर-उधर न डाल दें। प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खुश करने के बस यही काम हैं।

नअत

जग के हैं जो नायक सच्चे,
जिनके सारे काम थे अच्छे।
आये थे जो रहमत बन कर,
गये जगत से बदी मिटा कर।
उनका है शुभ नाम मुहम्मद ॥

जिसने सच्चा दीन सिखाया,
हमको सीधा मार्ग दिखाया।
ईश्वर का सन्देश सुनाया,
जग में रब का राज रचाया।
उनका है शुभ नाम मुहम्मद ॥

हमें कुरआन सुनाया जिसने,
करके अमल दिखाया जिसने।
अत्याचार मिटाया जिसने,
परहित पर उकसाया जिसने।
उनका है शुभ नाम मुहम्मद ॥

उनकी शिक्षा जो अपनाये,
दोनों लोक में इज़्ज़त पाये।
यही नबी हैं सबसे उत्तम,
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।